"भारतीय भाषा दिवस 2024: भारतीय भाषाओं की धरोहर और सांस्कृतिक गौरव का उत्सव"

"भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि संस्कृति और परंपरा का जीवंत दर्पण है।"

भव्य आयोजन का विवरण

दिनांक 11 दिसंबर, 2024 को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र और हिंदुस्तानी भाषा अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में डॉ. अंबेडकर अंतरराष्ट्रीय केंद्र, नई दिल्ली के भीम सभागार में 'भारतीय भाषा दिवस 2024' का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम महान समाज सुधारक चिन्नास्वामी सुब्रमण्यम भारती की जयंती के उपलक्ष्य में मनाया गया, जिसे भारत सरकार ने 'भारतीय भाषा दिवस' के रूप में घोषित किया है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य भारतीय भाषाओं के संवर्धन और संरक्षण को प्रोत्साहित करना था। इस कार्यक्रम में कई सम्मान समारोहों के साथ भारतीय भाषाओं के महत्व को व्यापक रूप से प्रस्तुत किया गया।

सम्मान समारोह और मुख्य सत्र

कार्यक्रम में 'मेधावी छात्र एवं भाषा गौरव शिक्षक सम्मान समारोह' का आयोजन किया गया, जिसमें 9 भारतीय भाषाओं से जुड़े 7152 मेधावी छात्रों को 'भाषा दूत सम्मान', 307 छात्रों को 'भाषा रत्न सम्मान', और 853 शिक्षकों को 'भाषा गौरव शिक्षक सम्मान' से नवाजा गया। ये भाषाएं थीं: हिंदी, संस्कृत, पंजाबी, बंगाली, तेलुगु, तमिल, गुजराती, सिंधी और उर्दू।

समारोह में डॉ. सच्चिदानंद जोशी, सदस्य सचिव, ने उद्घाटन भाषण में भारतीय भाषाओं की समृद्धता और विविधता को एकात्मकता का आधार बताया। उन्होंने भारतीय भाषाओं को केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक धरोहर की पहचान भी बताया। उनका यह संदेश था कि भारतीय भाषाएँ राष्ट्र की एकता और विविधता का प्रतीक हैं, और उनका संरक्षण एवं संवर्धन आवश्यक है। डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने स्कूली बच्चों को सम्बोधित करते हुए एकात्मकता को आकार देने और सांस्कृतिक सम्बंधों को बढ़ावा देने में भारतीय भाषाओं के महत्त्व पर जोर दिया। दृष्टिकोण को व्यापक बनाने और रचनात्मकता को विकसित करने में भाषाई विविधता की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए, उन्होंने छात्रों से कई भारतीय भाषाओं को सीखने, पढ़ने और लिखने का आग्रह किया।

अतिथियों के विचार और संदेश

इस अवसर पर भारतीय भाषाओं के महत्व को समझाते हुए प्रतिष्ठित मंत्रीगण एवं केंद्र के अध्यक्ष महोदय द्वारा अपने शुभकामना संदेश प्राप्त हुए।

श्री अमित शाह, गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार ने भारतीय भाषाओं की महत्ता और माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में उनकी बढ़ती भूमिका पर जोर दिया।

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, केंद्रीय संस्कृति मंत्री, भारत सरकार ने भारतीय भाषाओं को सांस्कृतिक धरोहर और पहचान की ओर ध्यान आकर्षित किया।

श्री नित्यानंद राय, गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार ने भारतीय भाषाओं के संरक्षण और प्रोत्साहन में इस आयोजन की भूमिका को सराहा।

श्री राम बहादुर राय, अध्यक्ष महोदय, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र ने भारतीय भाषाओं के संरक्षण और उनके महत्व को प्रोत्साहित करने में इस कार्यक्रम के योगदान की प्रशंसा की।

"भारतीय भाषाएँ हमारे देश की आत्मा हैं, जिनमें हमारी पहचान और गौरव सन्निहित है।"

भाषाई और सांस्कृतिक विविधता पर चर्चा

दिन भर चले इस कार्यक्रम में विभिन्न सत्र आयोजित किए गए, जिनमें भाषा और संस्कृति के महत्व पर गहन विचार-विमर्श हुआ। इन सत्रों में साहित्य, कला और समाज में भाषाओं की भूमिका को रेखांकित किया गया। साथ ही, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई.) की चुनौतियों और अवसरों पर चर्चा करते हुए संतुलित दृष्टिकोण अपनाने की सलाह दी गई।

डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने अपने संबोधन में ए.आई. को 'दोधारी तलवार' बताते हुए इसके विवेकपूर्ण उपयोग की वकालत की। हालांकि उन्होंने कल्पनाशीलता को प्रभावित किए बिना ज्ञान का विस्तार करने के एक उपकरण के रूप में एआई के विवेकपूर्ण उपयोग को प्रोत्साहित भी किया। उन्होंने रचनात्मकता और सांस्कृतिक मूल्यों को संरक्षित रखते हुए ए.आई. का इस्तेमाल करने पर जोर दिया। डॉ. जोशी ने युवा पीढ़ी से भारतीय भाषाओं और मूल्यों को अपनाने का आग्रह किया।

डॉ. अजित कुमार ने बच्चों को भारतीय भाषाओं पर गर्व करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला और शिक्षकों से आग्रह किया कि वे स्कूली बच्चों को भारतीय भाषाओं को सीखने, पढ़ने और लिखने के लिए सक्रिय रूप से प्रोत्साहित करें। उन्होंने यह भी बताया कि इं.गां.रा.क केंद्र वर्तमान में बोलियों पर केंद्रित परियोजनाओं पर काम कर रहा है, जिसका लक्ष्य उन्हें पूरी तरह से मान्यताप्राप्त भाषाओं के रूप में विकसित करना है।

प्रो. राजेंद्र रंजन चतुर्वेदी ने भारत की बोलियों, जिनमें पूर्ण विकसित भाषाओं के रूप में ढलने की क्षमता है, को संरक्षित करने के महत्त्व पर जोर दिया। उन्होंने बल देकर कहा कि सांस्कृतिक विविधता को बनाए रखने और भाषाई विरासत को समृद्ध करने के लिए इन बोलियों को संरक्षित करना महत्त्वपूर्ण है।

इस अवसर पर डॉ. अंबेडकर अंतरराष्ट्रीय केंद्र के निदेशक महोदय, श्री आकाश पाटिल ने उल्लेख किया, "भारतीय भाषा दिवस हमें यह प्रेरणा देता है कि विविध भारतीय भाषाओं का सम्मान न केवल हमारी सांस्कृतिक धरोहर को जीवंत रखता है, बल्कि एक समृद्ध और सशक्त भारत के निर्माण का आधार भी है।"

"भारतीय भाषाएँ हमारे इतिहास और भविष्य के बीच का सेतु हैं।"

सम्मान और समापन

कार्यक्रम में आयोजित 'मेधावी छात्र एवं भाषा गौरव शिक्षक सम्मान समारोह' एक भव्य और प्रेरणादायक आयोजन था, जिसमें भारत की 9 प्रमुख भाषाओं से जुड़े छात्रों और शिक्षकों को सम्मानित किया गया। इस समारोह का मुख्य उद्देश्य भाषाई विविधता और भारतीय भाषाओं की महत्ता को प्रोत्साहित करना था। समारोह में 7152 मेधावी छात्रों को 'भाषा दूत सम्मान' प्रदान किया गया। ये वे छात्र थे जिन्होंने अपनी भाषा के क्षेत्र में उत्कृष्टता हासिल कर एक मिसाल कायम की। इसके साथ ही, 307 विशेष छात्रों को 'भाषा रत्न सम्मान' से अलंकृत किया गया। इन छात्रों ने न केवल अपनी भाषा के ज्ञान अपना ज्ञानवर्धन किया, बल्कि अपनी उपलब्धियों से समाज में भाषा के प्रति जागरूकता फैलाने का कार्य भी किया। इसके अतिरिक्त, 853 शिक्षकों को 'भाषा गौरव शिक्षक सम्मान' से सम्मानित किया गया। ये शिक्षक वे प्रेरणा स्रोत थे, जिन्होंने अपने छात्रों को भारतीय भाषाओं के प्रति प्रेम और निष्ठा सिखाई। उनकी मेहनत और समर्पण ने छात्रों को उनकी भाषाई क्षमताओं को निखारने में मदद की। इन सम्मानों का वितरण हिंदी, संस्कृत, पंजाबी, बंगाली, तेलुगु, तमिल, गुजराती, सिंधी और उर्दू भाषाओं से जुड़े मेधावी छात्रों और शिक्षकों के बीच किया गया। इन नौ भाषाओं का चयन भारतीय भाषाओं की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्ता को ध्यान में रखते हुए किया गया, जो देश की विविधता में एकता के प्रतीक हैं।

पुरस्कार वितरण के साथ ही कार्यक्रम का विधिवत समापन हुआ। यह आयोजन भारतीय भाषाओं की विविधता और सांस्कृतिक महत्व को रेखांकित करने में सफल रहा।

इस ऐतिहासिक आयोजन ने भारतीय भाषाओं के प्रति जागरूकता और गौरव को नए आयाम दिए। यह दिन भाषा, साहित्य, और सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने की दिशा में एक प्रेरणादायक पहल के रूप में याद किया जाएगा। राजभाषा अनुभाग द्वारा आयोजित यह कार्यक्रम भारतीय भाषाओं की विविधता, समृद्धि और गौरव का प्रतीक था।

"हमारी भाषाएँ केवल शब्द नहीं, बल्कि भावनाओं और सभ्यता का प्रवाह हैं।"

- **राजभाषा अनुभाग**

****